अध्याय 3: उत्साह / अट नहीं रही है

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 10 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1	उत्साह — प्रश्न-अभ्यास	4 प्रश्न
प्रश्नावली 3.2	अट नहीं रही है — प्रश्न-अभ्यास	5 प्रश्न
प्रश्नावली 3.3	शब्द-संपदा	1 प्रश्न

प्रश्नावली 3.1 — उत्साह — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

कवि बादल से फुहार, रिमझिम या बरसने के स्थान पर 'गरजने' के लिए कहता है, क्यों?

हल

कविता 'उत्साह' में निराला बादल को केवल वर्षा लाने वाले के रूप में नहीं देखते, बल्कि उसे क्रांति और विप्लव के प्रतीक के रूप में संबोधित करते हैं।

फुहार, रिमझिम या बरसना — ये सब कोमल और शांत क्रियाएँ हैं जो केवल प्यास बुझाने का काम करती हैं। इनसे परिवर्तन की प्रेरणा नहीं मिलती।

कवि चाहता है कि बादल 'गरजकर' पीड़ित और शोषित जनता में उत्साह, विद्रोह और क्रांति की चेतना जगाए — ठीक वैसे जैसे वज्र की गड़गड़ाहट से पुरानी, जर्जर व्यवस्था टूटती है और नवजीवन का आरंभ होता है।

बादल की गर्जन — 'नूतन कविता' का प्रतीक है — जो पुरानी मान्यताओं को तोड़कर नई सृष्टि की रचना करती है।

इस प्रकार 'गरजने' का आह्वान केवल प्राकृतिक वर्षा के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक क्रांति और परिवर्तन के लिए है।

उत्तर: कवि बादल को क्रांति और परिवर्तन का प्रतीक मानता है — 'गरजना' सामाजिक विप्लव की चेतना जगाता है, जबकि फुहार/रिमझिम केवल शांत वर्षा है।

प्रश्न 2

कविता का शीर्षक उत्साह क्यों रखा गया है?

हल

'उत्साह' एक आह्वान गीत है जो बादल को संबोधित है। कविता में बादल को गरजने के लिए कहा गया है ताकि पीड़ित-प्यासे जन में नया जोश और प्राण-शक्ति का संचार हो।

कविता में 'विकल विकल, उन्मन थे उन्मन / विश्व के निदाघ के सकल जन' — अर्थात् ग्रीष्म की तपन से संपूर्ण जगत व्याकुल है। इस व्याकुलता को दूर करने के लिए बादल का आह्वान 'उत्साह' के साथ किया गया है।

बादल के आगमन से जहाँ एक ओर तप्त धरा शीतल होती है, वहीं दूसरी ओर कवि के अंतर्मन में नई कल्पना और नवजीवन का उत्साह जागता है।

कविता में 'नूतन कविता / फिर भर दो' — यह पंक्ति दर्शाती है कि बादल कवि में नई रचनात्मकता का उत्साह

भरता है।

इस प्रकार कविता का केंद्रीय भाव ही उत्साह है — चाहे वह प्रकृति में हो, जन-जीवन में हो या कवि की रचनाशीलता में।

उत्तर: कविता में बादल के आगमन से पीड़ित जन में नया जोश और नवजीवन का उत्साह जागता है — यही केंद्रीय भाव होने से शीर्षक 'उत्साह' सार्थक है।

प्रश्न 3

कविता में बादल किन-किन अर्थों की ओर संकेत करता है?

हल

निराला की कविता 'उत्साह' में बादल बहुआयामी प्रतीक है:

1. प्रकृति के स्तर पर — बादल वर्षा का स्रोत है जो तप्त धरा को शीतल करता है और प्यासे जन की प्यास बुझाता है।
2. क्रांति और विप्लव के प्रतीक के रूप में — बादल 'वज्र छिपा' कर विद्युत-छबि लिए हुए है; यह पुरानी, शोषणपूर्ण व्यवस्था को नष्ट करने वाली क्रांति का प्रतीक है।
3. नवजीवन और नई सृष्टि के प्रतीक के रूप में — 'बाल कल्पना के-से पाले' — बादल नई कल्पनाओं और नवीन विचारों का पोषक है।
4. कवि की प्रेरणा के रूप में — 'नूतन कविता / फिर भर दो' — बादल कवि में नई रचनाशक्ति और उत्साह का संचार करता है।
5. पीड़ित जन के उद्धारक के रूप में — 'विकल विकल, उन्मन थे उन्मन / विश्व के निदाघ के सकल जन' — बादल उन सबकी आकांक्षाओं का पूरक है।

उत्तर: बादल प्रकृति में वर्षा का स्रोत, क्रांति-विप्लव का प्रतीक, नवजीवन का पोषक और कवि की नूतन रचनाशक्ति का प्रेरक — इन अर्थों की ओर संकेत करता है।

प्रश्न 4

शब्दों का ऐसा प्रयोग जिससे कविता के किसी खास भाव या दृश्य में ध्वन्यात्मक प्रभाव पैदा हो, नाद-सौंदर्य कहलाता है। उत्साह कविता में ऐसे कौन-से शब्द हैं जिनमें नाद-सौंदर्य मौजूद है, छाँटकर लिखें।

हल

कविता 'उत्साह' में निम्नलिखित शब्दों में नाद-सौंदर्य विद्यमान है:

1. 'घेर घेर घोर गगन' — 'घ' वर्ण की आवृत्ति से बादलों के घुमड़ने और गड़गड़ाहट का नाद-सौंदर्य।
2. 'धाराधर' — इसमें 'ध' और 'र' की ध्वनि से भारी वर्षा के प्रवाह का बोध होता है।
3. 'ललित ललित' — 'ल' की पुनरावृत्ति से कोमलता और सुंदरता का नाद-प्रभाव।
4. 'विकल विकल, उन्मन थे उन्मन' — शब्दों की आवृत्ति से व्याकुलता और अनमनापन का नाद-सौंदर्य।
5. 'बादल, गरजो!' — 'ग' और 'र' ध्वनि में बादल की गड़गड़ाहट का अनुभव।
6. 'तप्त धरा' — 'त' वर्ण की ध्वनि से तपन का अनुभव।
7. 'घुँघराले' — घुँघराले बालों की लहराती गति का नाद-बोध।

उत्तर: 'घेर घेर घोर गगन', 'धाराधर', 'ललित ललित', 'विकल विकल', 'उन्मन थे उन्मन', 'घुँघराले' — ये नाद-सौंदर्य से युक्त शब्द हैं।

प्रश्नावली 3.2 — अट नहीं रही है — प्रश्न-अभ्यास

प्रश्न 1

छायावाद की एक खास विशेषता है अंतर्मन के भावों का बाहर की दुनिया से सामंजस्य बिठाना। कविता की किन पंक्तियों को पढ़कर यह धारणा पुष्ट होती है? लिखिए।

हल

छायावादी काव्य की मुख्य विशेषता है कि कवि के अंतर्मन की भावनाएँ प्रकृति के बाह्य दृश्यों में प्रतिबिंबित होती हैं — दोनों में सामंजस्य दिखाई देता है।

कविता 'अट नहीं रही है' की निम्नलिखित पंक्तियाँ इस धारणा को पुष्ट करती हैं:

1. 'कहीं साँस लेते हो, / घर-घर भर देते हो' — फागुन की सुगंध कवि के अंतर्मन में भी घर कर जाती है; बाहर की ताजगी भीतर भी महसूस होती है।
2. 'उड़ने को नभ में तुम / पर-पर कर देते हो' — फागुन की मादकता कवि को भी ऊँचाइयों की ओर उड़ने के लिए प्रेरित करती है — यह अंतर्मन की आकांक्षा और बाहरी सौंदर्य का सामंजस्य है।
3. 'आँख हटाता हूँ तो / हट नहीं रही है' — कवि का मन फागुन के सौंदर्य में इस तरह रम गया है कि बाहरी और भीतरी — दोनों आँखें एक हो गई हैं।

इन पंक्तियों में कवि का आंतरिक उत्साह और प्रकृति का बाह्य सौंदर्य एक-दूसरे में समाए हुए हैं — यही छायावादी सामंजस्य है।

उत्तर: 'कहीं साँस लेते हो, घर-घर भर देते हो', 'उड़ने को नभ में तुम पर-पर कर देते हो', 'आँख हटाता हूँ तो हट नहीं रही है' — इन पंक्तियों में अंतर्मन और बाह्य प्रकृति का सामंजस्य है।

प्रश्न 2

कवि की आँख फागुन की सुंदरता से क्यों नहीं हट रही है?

हल

फागुन का महीना प्रकृति की अपूर्व सुंदरता और उल्लास का महीना है। कवि निराला फागुन के ऐसे अनेक सुंदर दृश्य देख रहे हैं जो उनकी आँखों को बाँध लेते हैं।

1. 'अट नहीं रही है / आभा फागुन की' — फागुन की चमक और सुंदरता इतनी व्यापक है कि वह किसी एक स्थान में समा नहीं रही — हर तरफ छाई हुई है।
2. 'घर-घर भर देते हो' — फागुन की सुगंध और सौंदर्य हर घर में भर गया है।
3. 'पत्तों से लदी डाल / कहीं हरी, कहीं लाल' — रंग-बिरंगे पत्तों से लदी डालियाँ सौंदर्य की छटा बिखेर रही हैं।
4. 'कहीं पड़ी है उर में / मंद-गंध-पुष्प-माल' — मंद सुगंध वाले फूलों की माला हृदय में भी उतर जाती है।
5. 'पाट-पाट शोभा-श्री / पट नहीं रही है' — जगह-जगह शोभा और सौंदर्य इतना है कि वह किसी एक जगह में समा नहीं रहा।

फागुन की इस सर्वव्यापी सुंदरता और रंग-बिरंगे दृश्यों की अधिकता के कारण कवि की आँख हट नहीं पाती।

उत्तर: फागुन की व्यापक आभा, रंग-बिरंगे पत्तों से लदी डालियाँ, मंद-गंध पुष्पमाल और हर जगह छाई शोभा-श्री के कारण कवि की आँख फागुन से नहीं हट रही।

प्रश्न 3

प्रस्तुत कविता में कवि ने प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किन रूपों में किया है?

हल

कविता 'अट नहीं रही है' में कवि निराला ने फागुन में प्रकृति की व्यापकता का वर्णन निम्नलिखित रूपों में किया है:
1. दृश्य सौंदर्य — 'पत्तों से लदी डाल / कहीं हरी, कहीं लाल' — वृक्षों की डालियाँ हरे-लाल पत्तों से लदी हुई हैं। प्रकृति की रंग-विविधता।
2. वायुमंडलीय उपस्थिति — 'कहीं साँस लेते हो, / घर-घर भर देते हो' — फागुन की वायु हर घर में पहुँची है; प्रकृति की सर्वव्यापी उपस्थिति।
3. गंध-सौंदर्य — 'कहीं पड़ी है उर में / मंद-गंध-पुष्प-माल' — फूलों की सुगंध मन को मोह लेती है।
4. आभा और दीप्ति — 'अट नहीं रही है / आभा फागुन की' — फागुन की चमक इतनी व्यापक है कि वह समाती नहीं।
5. ऊर्जा और गति — 'उड़ने को नभ में तुम / पर-पर कर देते हो' — फागुन आकाश तक फैला है, मन को उड़ान देता है।
6. सौंदर्य की अनंतता — 'पाट-पाट शोभा-श्री / पट नहीं रही है' — प्रकृति की शोभा जगह-जगह इतनी अधिक है कि समाती नहीं।

उत्तर: कवि ने रंग-बिरंगे पत्तों, फूलों की सुगंध, फागुन की व्यापक आभा, वायुमंडलीय उपस्थिति और जगह-जगह फैली शोभा-श्री के रूप में प्रकृति की व्यापकता का वर्णन किया है।

प्रश्न 4

फागुन में ऐसा क्या होता है जो बाकी ऋतुओं से भिन्न होता है?

हल

फागुन (वसंत ऋतु का चरम) में प्रकृति और मानव-मन में अनेक विशेष परिवर्तन होते हैं जो इसे बाकी ऋतुओं से अलग बनाते हैं:
1. रंग-बिरंगी सुंदरता — पत्तियाँ 'कहीं हरी, कहीं लाल' हो जाती हैं; पेड़-पौधों पर नए पत्ते और फूल आते हैं जो अन्य ऋतुओं में नहीं दिखते।
2. सर्वव्यापी सुगंध — 'मंद-गंध-पुष्प-माल' — फूलों की मंद-मंद सुगंध हर तरफ फैली रहती है।
3. वायुमंडल में उल्लास — 'घर-घर भर देते हो' — फागुन की हवा में एक विशेष उल्लास और ताजगी होती है जो अन्य मौसमों में नहीं होती।
4. आभा और दीप्ति — फागुन की आभा इतनी विशेष है कि 'अट नहीं रही है' — यह प्रकाश और चमक अन्य ऋतुओं में नहीं मिलती।
5. मन को प्रफुल्लित करने की शक्ति — 'आँख हटाता हूँ तो / हट नहीं रही है' — फागुन मन को इस कदर मोह लेता है जो अन्य ऋतुओं की विशेषता नहीं है।

6. शोभा का अतिरेक — 'पाट-पाट शोभा-श्री / पट नहीं रही है' — इस मौसम में सौंदर्य की इतनी अधिकता है कि वह समाता नहीं।

उत्तर: फागुन में रंग-बिरंगे पत्ते-फूल, सर्वव्यापी सुगंध, विशेष आभा-दीप्ति और मन को मोह लेने वाला उल्लास होता है — यह अतिरेक का सौंदर्य इसे अन्य ऋतुओं से भिन्न बनाता है।

प्रश्न 5

इन कविताओं के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की विशेषताएँ लिखिए।

हल

दोनों कविताओं ('उत्साह' और 'अट नहीं रही है') के आधार पर निराला के काव्य-शिल्प की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. मुक्त छंद का प्रयोग — निराला छायावादी कवियों में मुक्त छंद के प्रथम प्रयोक्ता हैं। दोनों कविताओं में नियमित छंद का बंधन नहीं है।
2. नाद-सौंदर्य — 'घेर घेर घोर गगन', 'विकल विकल, उन्मन थे उन्मन', 'ललित ललित' — ध्वनि की पुनरावृत्ति से संगीतात्मकता।
3. प्रतीकात्मकता — बादल केवल बादल नहीं है — वह क्रांति, विप्लव, नवजीवन और प्रेरणा का प्रतीक है।
4. अनुप्रास अलंकार — 'घेर घेर घोर गगन, धाराधर', 'ललित ललित, काले घुँघराले' — वर्णों की पुनरावृत्ति से सौंदर्य।
5. छायावादी कल्पना — 'बाल कल्पना के-से पाले' — अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप देना।
6. प्रकृति और मनोभाव का सामंजस्य — 'आँख हटाता हूँ तो / हट नहीं रही है' — बाह्य प्रकृति और अंतर्मन का एकत्व।
7. आंदोलनात्मक स्वर — 'बादल, गरजो!' — कविता में क्रांति और आह्वान का जोरदार स्वर।
8. शब्द-चयन में सौंदर्य — 'अट नहीं रही है', 'पाट-पाट शोभा-श्री पट नहीं रही है' — नए और मौलिक शब्द-प्रयोग।

उत्तर: मुक्त छंद, नाद-सौंदर्य, प्रतीकात्मकता, अनुप्रास अलंकार, प्रकृति-मनोभाव का सामंजस्य और आंदोलनात्मक स्वर — ये निराला के काव्य-शिल्प की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

प्रश्नावली 3.3 — शब्द-संपदा

प्रश्न 1

निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखिए: धाराधर / उन्मन / निदाघ / सकल / आभा / वज्र / अट / पाट-पाट / शोभा-श्री / पट

हल

धाराधर — बादल (जो धाराएँ धारण करता है)
उन्मन — कहीं मन न टिकने की स्थिति, अनमनापन
निदाघ — गर्मी (ग्रीष्म ऋतु की तपन)
सकल — सब, सारे
आभा — चमक, दीप्ति
वज्र — कठोर, भीषण (यहाँ बिजली/अस्त्र के अर्थ में)
अट — समाना, प्रविष्ट होना
पाट-पाट — जगह-जगह
शोभा-श्री — सौंदर्य से भरपूर
पट — समा नहीं रही है

उत्तर: धाराधर=बादल, उन्मन=अनमनापन, निदाघ=गर्मी, सकल=सब, आभा=चमक, वज्र=कठोर/भीषण, अट=समाना, पाट-पाट=जगह-जगह, शोभा-श्री=सौंदर्य, पट=समा नहीं रही है।